Sh.
57

२२८
मर्ठ

पी. सं. 4168

4168 = 39

महाकाली स्वाहाकार
(गुरुमुखी लिपि) तन्त्र
12. अपूर्ण



ॐ नमो भगवत्यै भद्रकाल्यै नमो नमः ।। ॐ ।।
ॐ अस्य श्रीरात्रिकालिकाभद्रमन्त्रमहामन्त्र
स्य श्रीभद्रकालभैरव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः
श्रीश्मशानकालिकादेवता श्रीपद्मकला भ्यै
प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः ।। ॐ ।। ॐ श्मशा
नस्थां कलविन्यस्तमिंकै प्रेताङ्कि व
सुभ्रमणीं पाञ्चविंश भुजां कृत्तभवं भि
न्नां शुक्रविस्मयक्षत्रां भित्रमन्त्रं भिन्न
प्रेंभिन्नां स्त्रीलिङ्गविग्रहकां ऋणवती
श्रुभं कलभमाभाम ।। उर्ध्वकेशास्य प्रे
मुखं सुदीर्घं दंष्ट्रा ।। ॐ नमः कालि
काणाक्षे ।। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रीं ह्रीं श्म
शानकालिकायै भद्र काल्यै महाकाल्यै क
पालिन्यै उग्रकाल्यै भद्रकाल्यै उग्रकाल्यै
विरोधिन्यै कालिकायै कालरात्र्यै भद्रकाल
निरोधिन्यै कालभैरवमहायै उग्रपश्यक
स्मिन्यै कामरूपायै कामिन्यै कामुख्यै कमनी
यरूपिण्यै कपालमालमालिन्यै उग्र
रेखाभिन्यै ककारपलभवासिन्यै क

ॐ
क. ली.
म. ०

कीर्त्यै कामप्रदायै कामतुष्ट्यै कामदुघायै
कामनेत्र्यै कलावत्यै कान्तायै कल्मषघ्ना-
यै कामाराध्यायै कमलमालिन्यै कुलीनायै कु-
लवत्यै चपलायै हंसायै मनोज्ञकामिन्यै
कौमार्यै कुलरूपायै गम्भीरायै गम्भीरस्वरायै
गम्भीरायै गम्भीरायै कुलेश्यै ह्रींकार्यै क-
मलकलायै कालभुजायै कालज्ञायै कुल-
कान्तायै मधुराङ्गिन्यै उग्रायै उग्रतारायै
श्रीप्रियायै विभूतिदायै मदनमायै नील-
वर्णायै मेघवाहनायै भद्रभद्रायै भि-
न्नभिन्नायै गङ्गायै नागपत्न्यै कद्र्वै कुल-
द्र्वै कुलपालायै मायेश्वर्यै मातृकायै
धराधर्यै नागभूषितायै वस्वन्त्यै वसुक-
न्यायै रमणायै भूतेश्यै शिवायै भवान्यै
नन्दिन्यै गणमुख्यविघ्नेश्वरायै गङ्गास्व-
रूपिण्यै भिन्नमन्त्रसम्भवायै योगिन्यै योग-
मायायै योगसिद्धायै योगायै योगज्ञायपायै
मदनमोहायै मदनमायायै मन्दरे पराभव-

ण्यै श्रीमत्यै विश्वात्मने विमलायै
त्रिलोकमात्रे नागेन्द्रभूषणभूषितायै भुजङ्ग-
भूषितायै मधुकैटभमर्दिन्यै श्म-
शानायै श्मशानवासिन्यै श्मशानस्थितायै श्म-
शानप्रियायै श्मशानवासिनीदेव्यै कालरात्र्यै कालस्व-
रूपायै महत्यै महाकालीप्रियायै श्मशानेश्वर्यै
महत्यै महाकालिकायै ॥ उक्तं च ॥
उत्तमे ह्रीं क्लीं कालिके श्मशानवासिनि
स्वाहा ॥ ह्रीं स्त्रीं भगवति महाकालि
भगवति श्मशानवासिनि भैरवी विश्व-
रूपिणि ह्रीं कालि करालि ह्रीं स्त्रीं क्लीं
भगवति भयङ्करि महाकालि ह्रीं
त्रिपुरे विश्वरूपिणि कालिके ॥
ह्रीं भगवत्यै महाकालिकायै महत्यै कालिकायै
महादेव्यै भैरव्यै भद्रकाल्यै कालिकायै
भद्रकाल्यै भैरवकलत्रायै भैरवभा-
र्यायै भैरवप्रियायै भैरवपू-
जितायै श्मशानवासिन्यै भैरव्यै ।

ॐ
का. ली.
श्रु.
९

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] राकिण्यै लाकिन्यै [illegible]

[illegible] डाकिन्यै शाकिन्यै [illegible]

काकिन्यै [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

+ [illegible] +

[illegible]

ॐ
काली.
पृ. ८

मये ॥ ॐ ह्रीं कालि ... ॥ ध्यानं ॐ करा
लवदनां भक्तिभयहरां घोरां चतुर्भुजां
वीरां मुक्तकेशीं वरदां दिव्यां मुण्डमालावि
भूषितां वराभयकरां मुण्डमालां सकलमय
करां सद्यश्छिन्नशिरः खड्गवामाधोर्ध्वकरा
म्बुजां शवारूढां ॥ ॐ कालिका
मुद्यै भीमायै भीषणायै भैरव्यै महारौद्र्यै रौ
द्रायै भवानीभवायै भद्रकाल्यै भद्रायै
मङ्गलायै भैरवप्रियायै भगवत्यै भव
प्रियायै भगमालिन्यै भगरूपायै भवि
तव्यायै भवभीतिहरायै भैरव्यै भगभूमि
स्थितायै श्मशानवासिन्यै मन्त्रिण्यै भयदे
विदेहायै भुवनेश्वर्यै हिरण्मय्यै हे
मप्रियायै हेममालिन्यै श्यामायै गुह
ायै महत्यै महाभयहारिण्यै शिवप्रि
यायै सीताभवायै विकटायै भीमनादिन्यै कामा
क्ष्यै कमलायै कान्तायै कमलप्रियायै कमलमालि
कायै कालीरूपायै यमप्रियायै क्षमायै कृपायै क्ष

ॐ
काली.
स्त.
९

ज्योतिःप्रियायै भद्रायै नित्यायै प
द्मायै निद्मायै कद्मायै प्रतिष्ठितायै पी
द्मायै पद्मायै पद्मायै वसुधाप्रभायै श्री
दुहे दुहे दुग्धमुख्यै नित्यायै हि
ङ्गकायै भद्रकालीनायै निष्कलायै भक
भायै कलालीविहे कमण्डलुकलायै ग
मण्डिरभायै शिवनन्दे शिवुभयायै क
ल्पलतायै सत्ये श्रीनवदुर्गायै कर्णि
तानिकायै नरायै सर्वेश्वर्यै विश्वभायै
भभायै सुभद्रायै भद्रिके प्रलयै क्ष
मे क्षेमशमि श्रीलेखायै नक्ष
यै विष्णुभायै कालरूपिणि दक्षिणि
ख्यायै सुषुम्नाभायै पद्ममालिने
मन्त्रे भवनाये हृदये श्रीलेखाधारिणी
मुद्रे दण्डधरायै पताकधृते मातृके ही
मनामिते मोक्षदे मङ्गले मधुमिष्ट
भावितेः कामरूपिणि लिङ्गे भद्रे
दशिके महेश्वरि ॥ ॐ नमः ॥

ॐ [illegible] ५०० ॥ श्रीः ॥
ॐ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
ॐ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ॐ
काली.
सु.
७

[illegible]

कालीं·
सं॰
७

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥

स्तवराजे ॥ [illegible] १०० ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कली.
पृ.
३

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

क्षमायै गीर्प्रभूष्मील्मत्तभक्तां पत्र
उभायै कभक्षेमस्कंडभ्रेक्षकएव्याभव
ख्मिर्ये भउन्नउभवत्तेल्यै लभङ्केकामी
क्षिायै भनेक्ष्मभ्रुलीकलायै नंभीगाते
विडम्भिर्यै पञ्चागानरङ्गै ल्मेज्ञाक्षुभक
मिद्रै नानभामिभरिभूतेञ्जुझकम्नाक
क्लिये नणद्रमत्तनिमाशवलयाक्षिभणि
ङ्गै पञ्जुलीयकमिइहै विमिङ्गाङ्ग
ष्ठिकायै भटभ्रुभनीकाभ्रकलभङ्गी
गझिङायै कञ्जातनकभ्रीडङ्गभद्रवले
मिडायै विमिङ्गङ्गभूषिवी कलमापि
इलभिङ्गायै गङ्गीभभूहूङभिरुभगनि
वभिदे भक्षद्रङेमनकरै भभागङ्गप
श्ले भदभूललपञ्चङ्कङ्गभङ्गलवहिरै
धक्षविष्णुमिवङ्गीङायै गनभापविलामि
द्रै दगविष्णुविगिज्ञिद्रबङ्गायकभाविड
यै ञ्चङ्गेयेरै धक्षयेरै लगहेरै मयेनिए
ये क्षगञ्जपायै ॥ इति ॥ ङेज्ञीक

श्रीं कलीं सौं

ॐ भूतये मुकुन्दाय पिङ्गलाय वृषाङ्काय भ
क्तप्रियाय गतिप्रदाय लिङ्गभूताय लिङ्गमू
र्तये लिङ्गाध्यक्षाय लिङ्गाधीशाय लिङ्गपी
ठाय लिङ्गमालाय लिङ्गरूपाय लिङ्गलि
ङ्गाय भवाय शर्वाय ईशानाय पशुपतये
प्रियंवदाय गङ्गाधराय शिवरूपाय मृ
त्यवे मृत्युञ्जयाय लिङ्गिने भस्मिने
शाम्भवे भव्याय लिङ्गाभरणधराय
शाम्भवाय लिङ्गमालाकण्ठरूप
ये शाम्भवाविरूपाय शालिङ्गम
ण्डलाय शालिङ्गस्वरूपिणे शालि
ङ्गमध्यस्थाय शालिङ्गस्वरूपिणे शा
लिङ्गस्वरूपाय शालिङ्गस्थापकाय स्व
यम्भूलिङ्गप्रतिष्ठाय स्वयम्भूलिङ्गप्रि
याय स्वयम्भूलिङ्गरूपाय स्वयम्भूलिङ्ग
निष्ठाय स्वयम्भूलिङ्गस्थापकाय स्वयम्भूलिङ्ग
स्वरूपाय स्वयम्भूपूजकप्रियाय स्वय
म्भूपूजकाय स्वयम्भूपूजतिलकाय

ह्रैं
क्लीं
ह्रूं
०

ॐ यं भ्रूं अं मातङ्ग्यै ॐ यं भ्रूं अं विरू
प्यै ॐ यं भ्रूं हं मम्हरूपायै ॐ यं भ्रूं अं
स्मरायै ॐ यं भ्रूं हं मणिकर्ण्यै ॐ यं भ्रूं
अं विलयायै ॐ यं भ्रूं हं मभियायै ॐ
यं भ्रूं हं मत्तलालभैरवभन्नभायै
ॐ यं भ्रूं हं मत्तलूदरी त्रिपुरसुन्दर्यै
ॐ यं भ्रूं हं मायायै ॐ यं भ्रूं हं माल
यायै ॐ यं भ्रूं अं विलयायै ॐ यं भ्रूं
अं वश्यै ॐ यं भ्रूं हं मत्रिपुरायै ॐ य
भ्रूं हं भैरव्यै ॐ यं भ्रूं अं वागायै ॐ
यं भ्रूं अं मालिकायै ॐ यं भ्रूं हं मध
मायै ॐ यं भ्रूं हं मभूतायै ॐ यं भ्रूं हं
मङ्गलायै ॐ यं भ्रूं हं ममङ्गलायै ॐ यं भ्रूं
हं ममङ्गायै ॐ यं भ्रूं अं कौशिक्यै ॐ
यं भ्रूं हं भैरवायै ॐ यं भ्रूं अं वशिन्यै
ॐ यं भ्रूं हं मभद्रायै ॐ यं भ्रूं अं वाणि
न्यै ॐ यं भ्रूं हं भैरवायै ॐ यं भ्रूं अं
त्रिपुरायै ॥ इति ॥ श्रीकलाः ७०

भूतं ॥ ॐ भग्ने विश्वभुक्त्रः करकम
लतलेपात्रयन्त्री दम्भन्त्री नादं धेयवस
न्त्रीभकलङ्गमन्धकन्यायन्त्री मविद्र
मूर्भं विद्धं पिरीमन्तल्लिवदनला
सूलधेवदन्त्री द्रावेदन्रकलीन
वृत्तलमन्निकंवृत्तमहाभागामा ॥
ॐ स्वयम्भूकुसुमेन्द्राय स्वयम्भूपुष्प
स्वयम्भूकुसुमधारिण्यै। + धृताङ्गै + स्वयम्भूकुसुमैस्तुष्टे स्वयम्भू
नीलविलोकिन्यै स्वयम्भूफलवेदिनि स्व
यम्भूकुसुमसन्तुष्ट्यै स्वयम्भूपुष्पप्राशि
न्यै स्वयम्भूपुष्पाविष्टमन्यै स्वयम्भू
पुष्पकण्ठिकायै स्वयम्भूपुष्पकमलस्तुत्यै
स्वयम्भूदेहधारकायै स्वयम्भूनायिका
यै स्वयम्भूतत्त्वविदन्यै स्वयम्भूपुष्प
करान्यै स्वयम्भूपुष्पकप्रियायै स्व
ॐ यम्भूसाधकपात्रायै + स्वयम्भूसिद्धकामुक
काली० यै स्वयम्भूपरमधाम्न्यै स्वयम्भूपुष्प
भु० ०० सिद्धै भवकलेषवर्तिन्यै भवकाले

स्वयम्भूरययोनिने, स्वयम्भूपुष्पमज्जन्यै। स्वयम्भूपुष्पयोनिने।
स्वयम्भूपरकरणान्यै। +

ह्रभीडयै भचकलेन्द्रखङ्गिकायै भच
कलेन्द्र[illegible]यै भचकलेन्द्रवेन्द्रयै, भचकलेन्द्रवेन्द्रदन्यै।
ज्वरभूषणभमाभीषण्यै गेलभूषणभमागरे
ज्वरगेलेन्द्रभीडयै ज्वरगेलेन्द्रखङ्गिक
यै भयभञ्जन्यै सिवायै चण्डे पावित्रे ले
कपालवृन्दे कीर्त्ये यमक्षित्रे भणायै विभणायै
सुरभद्रदे भ्रापमायै ठीमायै भयायै भे
तान्यै सुरसुन्दरमित्रे सुरपालन्यै सुर
भूषण्यै सुरभिवृन्दविभित्रे सुरलया
यै सुरठीकायै सुरभमभमागरे सुरभूत्यै
सुरवेभभद्रभूत्यै सुरवल्लायै सुरभृन्दे
सुरकरे सुरप्रकपारिकदे सुरभायै
सुखित्रे सुरभंभवायै सुरभद्रदे सुरप्र
ज्यै सुरपेडन्यै सुरडभून्यै सुखित्रे भ
नसुरायै सुरनवायै सुरसिद्धिविधा
यित्रे सुरस्थिरयायै सुरदायै सुरकरु
णवालिन्यै सुरगाढकदे सुरभमाद
विमायित्रे सुरेन्द्रवायै भमसुरायै प्रल

[illegible]